ब) शिव और पार्वती संभाषण ।

शिव पार्वती संभाषण

`रामचरितमानस` के दुसरे वक्ता और श्रोता है चार संवादों में से है शिव और पार्वती। इस संवाद में तुलसीदासजी यह कहना चाहते हैं कि जिज्ञासु ज्ञान का सच्चा अधिकारी होता है। यह संवाद पश्चिम घाट का प्रतीक है। इस संवाद में ज्ञान का प्रतिपादन हुआ है इसलिए इसे `ज्ञानघाट` कहा जाता है। तुलसीदासजी ने शिव-पार्वती संवाद को याज्ञवल्क्य के द्वारा अभिव्यक्त किया है।

इस संवाद के वक्ता परमदेवता शिवजी हैं और श्रोता पार्वती है। ये दोनों देवता वर्ग के हैं। इनके संभाषण का स्थान कैलास पर्वत है। एक दिन कैलास पर्वत पर विशाल वटवृक्ष के नीचे शिवजी अपने बाघाम्बर पर सहजभाव से बैठे थे। उसी-समय पार्वती `भल-अवसर` जानकर शिव के पास गईं। शिवजी ने उन्हें बड़े आदर के साथ वाम भाग में आसन दिया। पार्वती को अपने पूर्वजन्म की बातें या आ गयीं। उस समय अज्ञान के कारण शिव से उसे बिछोहे का भी स्मरण हुआ वह उस अज्ञान को दूर करना चाहती थी। इस समय पार्वती ने शिवजी को अनुकूल जानकर अपना संदेह प्रगट किया -

`प्रभु जे मुनि परमारथ वादी। कहहिराम कहुँ ब्रह्म अनादी।
सेस सारदा वेद पुराना। सकल करहि रघुपति गुन गाना।।
तुम्ह पुनि राम-राम दिन राती। सादर जपउ अनग अराती।
रामु सो अवध नृपति सुतसोई। की अज अगुन अलख गति कोई।।
जों नृप-तनयत किमि नारि बिरहँ मति मोरि ।।`

इसप्रकार स्पष्ट है कि पार्वती का संदेह नृप तनयत ब्रह्म किमि से संबंधित है इसका अर्थ यह है कि यदि राम राजा का पुत्र है तो वह ब्रह्म कैसे हो सकता है ? पार्वती का यह प्रश्न भरद्वाज के प्रश्न की अपेक्षा अधिक गूढ है। वह और भी कई प्रश्न पूछती है जैसे -

१. निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप कैसे धारण करता है ?
२. राम ने अवतार किसलिए लिया था ?
३. राम की बाललीला और जानकी विवाह के बारे में
४. राम ने राज्य-त्याग किस कारण से किया औरउसने रावण को किस प्रकार मारा ?
५. सिंहासन पर बैठकर जो लीलाएँ कीं उसके बारेमें और अंत में वे अपनी प्रजासहित धाम को किस प्रकार गये ? यह भी प्रश्न पूछा ।

पार्वती के इन प्रश्नों को सुनकर शिवजी जानते हैं कि, रामकथा सुनने की जिज्ञासा पार्वती के मन में निर्माण हुई है । यहाँ डॉ. रामबाबू शर्मा तुलसी की भूमिका व्यक्त करते हुये कहते हैं - " जिज्ञासू को ज्ञान मिलना ही चाहिए वह कोई भी क्यों न हो । ज्ञान का सच्चा अधिकारी तो वही होता है । "[2]

पार्वती के इन प्रश्नों से शिवजी प्रसन्न होकर कहते हैं -

" झूठेउ सत्य जाहि बिनु जाने । जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने
जेहि जानें जग जाइ हेराई । जागे जथा सपन भ्रम जाई । "[3]

पार्वती के संदेह को दूर करने के लिए तुलसीदासजी ने शिव द्वारा पार्वती के समाधान के लिए ' मानस ' में इस संवाद को अधिक व्यापकता प्रदान की है ।

डॉ. श्रीनिवास शर्माजी कहते हैं कि - " शंकर और उमा संवाद आर्त भक्त के रूप में स्वीकार करने योग्य हैं । "[4]

इस संवाद में शिवजी ने ज्ञान को साधन बनाकर पार्वती को रामकथा समझायी है । अत: पार्वती के प्रश्नों के अनुसार शिवजी श्रीरघुनाथजी का चरित्र-वर्णन करने लगते हैं ।

निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप कैसे धारण करता है, इसके बारे बारेमें वे कहते हैं -

" सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा । गावहि मुनि पुराण बुध बेदा ।
अगुन अरूप अलख अज जोई । भगतप्रेम बस सगुन सो होई ।।"[5]

इसप्रकार जो निर्गुण है वही सगुण है जैसे जल और ओले में भेद नहीं वैसे सगुण और निर्गुण में भेद नहीं । श्रीरामचंद्रजी व्यापक ब्रह्म परमानन्द स्वरूप, परात्पर प्रभु और पुराण पुरूण हैं । जिनका नाम लेनेसे मनुष्य के अनेक जन्मों के किये हुये पाप जल जाते हैं ।

अवतार के बारेमें शिवजी कहते हैं कि जब-जब धर्म का -हास होता है तथा नीच अभिमानी राक्षस बढ जाते हैं, और वे इतना अन्याय करते हैं कि उस अन्याय से देवता और पृथ्वी कष्ट पाती है । तब ये कृपानिधान रघुनाथजी अवतार लेते हैं ।

" अवतार का अर्थ है - अवतरित होना । भक्त का करूण क्रन्दन सुनकर प्रभु पृथ्वीतर तमर उतर आते हैं मानव के रूप में अपने लौकिक आचरण के द्वारा समाज को भय और दु:ख से रहित मार्ग सुझाते हैं । "[6]

राम का अवतार किस कारण हुआ ? यह शिवजी एक-एक कथा के द्वारा बता रहे हैं -

श्रीहरि के जय और विजय इन दो दवारपालों ने ब्राह्मणों के शाप से असुरों का शरीर पाया था । एक का नाम था हिरणाक्ष और दुसरे का हिरण्यकश्यपु । इनको नष्ट करने के लिए भगवान राम ने अवतार लिया था ।

एक बार नारदजी द्वारा कामदेव को जीतने के कारण उनके मन में अहंकार पैदा हुआ था । उनके अहंकार को नष्ट करने के लिए भगवान राम ने

अवतार लिया था। इसीलिए भगवान ने सुंदरी विश्वमोहिनी का रूप लेकर नारदजी को मोहपाश में बध्द किया। उस समय भगवान ने नारदजी को कुरूप बनाया था। इसीलिए नारदजी ने भगवान को यह शाप दिया कि - तुम्हें भी स्त्री का विरह सहना पडेगा। नारदजी के साथ भेजे गए दो गणों को भी नारदजी ने यह शाप दिया कि तुम अगले जनम में राक्षस बनोगे और तुम्हारी मुक्ति तब होगी जब हरि के हाथों युध्द में मारे जावोगे। इसपर पार्वती शिवजी को पूछती हैं कि नारदजी ने भगवान को शाप कैसे दिया ? तब शिवजी कहते हैं -

> ' बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ न कोइ।
> जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ ॥ '७

इसप्रकार दोनों राक्षसों की मुक्ति के लिए और देवताओं को प्रसन्न करने के लिए, सज्जनों को सुख देने के लिए और पृथ्वी का भार हरण करने के लिए भगवान ने एक कल्प में मनुष्य अवतार लिया था।

शिवजी कहते हैं कि ज्ञानी मुनि भी भगवान की माया से मोहित हो जाते हैं। देवता मुनि और मनुष्यों में ऐसा कोई नहीं है, जिसे भगवान की माया मोहित न कर दे।

शिवजी कहते हैं - ' अब भगवान के अवतार का दूसरा कारण सुनो - मनु और शतरूपा ने कठोर तपश्चर्या करके भगवान से यह वर माँग लिया था कि हमें आप जैसा बेटा चाहिए। इसलिए भगवान के उनके बेटे के रूप में अवतार लिया था। '

शिवजी आगे और एक कथा कहते हैं - ' सत्यकेतू राजा के दो पुत्र थे - प्रतापभानु और अरिमर्दन। इन्हें ब्राह्मणों के शाप के कारण राक्षसों का जन्म लेना पडा। राक्षस बने हुये इन दोनों में से एक था रावण और दूसरा कुंभकर्ण।'

इस संवाद में तुलसीदासजी शिवजी द्वारा यह कहना चाहते क हैं कि - ब्राह्मणों का शाप कितना भयावह होता है ।

उसके बाद शिवजी पार्वती से कहते हैं - ` रावण ने मुझे प्रसन्न करने के लिए कठोर तप किया था । तभी मैंने प्रसन्न होकर उसे यह वर दिया - ` तुम्हारी मृत्यू मनुष्य और वानर को छोड अन्य किसी के हाथ से नहीं होगी । तभी रावण को भगवान के वर के कारण यह अहंकार हो गया कि अब मुझे मारनेवाला दुनिया में कोई नहीं है । इसीलिए वह सभी को छलने लगा । उस समय सब ओर भ्रष्टाचार, व्याभिचार और हिंसा आदि का बोलबाला था । देवता, यक्ष, गन्धर्व, मनुष्य, किन्नर सभी दु:खी हो गए । नागकन्याओं तथा बहुतसी अन्य सुन्दर स्त्रियों को अपनी भुजाओं के बल पर जीत कर उसने उनसे विवाह कर लिया । तब शिवजी कहते हैं, हे पार्वती -

` जिन्ह के यह आचरन भवानी । ते जानेहु निसियर सब प्राणी ।
अतिशय देखि धर्म के ग्लानी । परमसभीत धरा अकुलानी ।। `8

इसप्रकार धर्म के प्रति ग्लानी को देख कर पृथ्वी अत्यन्त भयभीत हो गयी । सभी देवताओं ने इस संकट का नाश करने के लिए ब्रह्माजी से बिनती की । तब ब्रह्माजी ने रघुनाथजी की स्तुति की । उसी समय आकाशवाणी हुओ -

` जानि डरपेहु मुनि सिध्द सुरेसा । तुम्हहिलागि धरि हुउँ नर बेसा ।
असन्ह सहित मनुज अवतारा । लेहउँ दिनकर बस उदारा ।।`

शिवजी आगे कहते हैं - ` कश्यप और आदिति ने बडा ही तप किया था । उनको यह वर दिया कि तुम अगले जनम में दशरथ और कौशल्या के रूप में मनुष्यों के राजा बनोगे और उस समय दशरथ वंश में मैं चार पुत्रों के रूप में अवतार लेकर सभी पृथ्वी का भार हर लूँगा ।

इसप्रकार दशरथ के वंश में भगवान ने चार पुत्र के रूप में जन्म लिया। इन पुत्रों का नामकरण दशरथजी ने अपने गुरुवसिष्ठजी के द्वारा ख रख लिए। उन्होंने ऐसे नाम रख लिये कि नाम में ही उनके कर्तव्य की पूर्ति हुयी है। वे नाम इसप्रकार रख दिये -

१) जो आनन्द के समुद्र और सुख की राशि है, जिनके अस्तित्व से तीनों लोक सुखी होते हैं उनका नाम ` राम ` है।

२) जो संसार का भरण-पोषण करते हैं उनका नाम ` भरत ` रखा गया।

३) जिनके सस्मरण मात्र से शत्रु का नाश होता है वे ` शत्रुघ्न ` हैं।

४) जो शुभ लक्षणों के धाम हैं, उनका नाम ` लक्ष्मण ` रखा गया।

इसप्रकार भगवान ने सभी के कल्याण के लिए चार पुत्रों के रूप में अवतार लिया था।

डॉ. स्वामीनाथ शर्मा के मतानुसार - ` तुलसीदासजी इस संवाद में शिवजी द्वारा एक-एक प्रसंग को उठाकर उसके द्वारा कुछ कथात्मक निर्देश करते हैं, तो कुछ राम के स्वरूप संबंधी कथन को सुनाते हैं। कहीं राम के प्रताप या प्रभाव का वे परिचय देते हैं और रामभक्ति में ही सभी का कल्याण है यह बताते हैं।`[१०]

तुलसीदासजी इस संवाद में हमें राम के मनुष्य-अवतार के कारण और लोकव्यवहार का भी परिचय राम द्वारा देते हैं। उसके साथ-साथ रामभक्ति के लिए उन्होंने उपदेश भी किया है और भगवान् की माया का परिचय देते हुए ववह सभी को मोहित करती है इससे छुटकारा पाने के लिए राम-भक्ति करनी चाहिए ऐसा कहते हैं। यह सब कहते हुए तुलसीदासजी ने राम एक मानव होकर भी परब्रह्म हैं यह बार-बार बताया है।

इन सभी बातों को लेकर शिवजी आगे पार्वती को रामकथा सुनाते हैं। तुलसीदासजी ने इसप्रकार शिव-उमा संवाद को व्यापक बनाया है। राम की बाल-लीला से लेकर प्रजासहित परमधान गमन तक की कथा का विस्तार किया है। यहाँ शिवजी ने ज्ञान को आधार माना है।

शिवजी पार्वती को कथा सुना रहे हैं - राम ने दशरथजी के वंश मे जन्म लिया तब से वह बाललीला करने लगे। वे अपनी तोतली बोली से माता-पिता के साथ सभी को सुख देने लगे। उनके रूप का वर्णन वेद और शेषजी भी नहीं कर सकते। वे सुख के सागर, मोह से परे तथा ज्ञान, वाणी और इंद्रियों से अपर हैं। हे पार्वती, भगवान राम अत्यंत प्रेम से दशरथ-कौशल्या के वशीभूत होकर पवित्र बाललीला करते हैं जैसे -

"भृकुटि बिलास नचावइ ताही। अस प्रभु छाडि भजिअ कहु काही।
मन, वचन, क्रम छाडि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई।।"[११]

शिवजी ने यहाँ माया को भगवान के वश में बताकर प्रभु की प्रभुता का परिचय दे देकर, हमें उनका भजन करने के लिए कहा है।

आगे शिवजी कहते हैं कि एक बार माता कौसल्या ने राम को स्नान कराके उसे पालने में सुलाया। और वह रसोई बनाकर पूजा करके रसाईघर में नैवदय लाने के लिए गयी। तब उसे श्रीराम रसोईघर में भोजन करते नजर आये। माता कौशल्या भयभीत,चकित होकर पुत्र के पालने के पास गयी वहाँ पुत्र को सोया हुआ देखा। इसप्रकार एक ही समय दो राम को ही दो स्थानों पर देखा।

"इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा।
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी।।"[१२]

इसप्रकार तुलसीदासजी ने शिव द्वारा राम की बाललीला के वर्णन में राम के ईश्वरत्व का साक्षात्कार स्पष्ट किया है।

"तुलसी के राम परब्रह्म हैं। वे अपने आचरण को लोक तक पहुँचाने के लिए माया का आश्रय लेते हैं क्योंकि आचार का स्त्रोत माया है और माया ब्रह्म पर आधृत है, उपसत्ता है।"[१३]

उसके बाद शिवजी पार्वती से कहते हैं कि राम बडे होते हैं तब विश्वामित्रजी राम और लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा करने के लिए दशरथजी के पास उनकी मांग करते हैं। तत्पश्चात दोनों भाई विश्वामित्र के साथ जाकर वहाँ के राक्षसों का नाश करते हैं। रास्ते में अहल्या का उध्दार करके, विश्वामित्रजी के साथ राम और लक्ष्मण मिथिला नगरी में प्रवेश करते हैं। वहाँ जनक के प्रण के अनुसार शिव-धनुष्य को तोडते हैं। इसप्रकार विवाह का कार्य पूरा होता है।

यहाँ तुलसीदासजी ने विश्वामित्रजी के यज्ञ-रक्षा के कारण को निमित्त मानकर राक्षसों का नाश और अहल्या-उध्दार में राम के ईश्वरावतार का परिचय दिया है।

प्रेमनारायण टंडन के मतानुसार - "जनक कन्या सीता से विवाह करके राम ने मनुष्य अवतार लेने के कारण विवाह जैसे लोक-व्यवहार का पालन किया है।"[१४]

आगे शिवजी कहते हैं - हे पार्वती, विवाह के बाद गुरु सहित भगवान राम, लक्ष्मण, सीताजी, अयोध्या की ओर प्रस्थान करते हैं। वहाँ सभी अयोध्यावासीयों को आनन्द हो रहा है। वे सभी दशरथजी से राम राज्याभिषेक की मांग करते हैं। तभी बीच में मंथरा दासी कैकयी को उसके वर की याद दिलाकर कैकयी को दशरथजी से राम के लिये वनगमन और भरत

के लिए राज्य की माँग करने को कहती है। इसप्रकार मंथरा कैकयी के मन में कूटनीति को जगा देती है। तब दशरथजी बहुत ही दुःखी होते हैं। उसी समय राम पिताजी के पास आते हैं। अपने पिता की यह अवस्था देखकर माता कैकयी से पिता के दुःख का कारण पूछते हैं। कैकयी सभी बातें उन्हें बता देती है तब रघुनाथजी कहते हैं -

" सुनु जननी सोइ सुत बडभागी। जो पितु-मातु बचन अनुरागी।
तनय मातु-पितु तोषण निहारा। दुर्लभ जननि सकल संसार।।"[१५]

हे माता। वही पुत्र बडभागी है, जो पिता-माता के वचनों का अनुरागी है। माता-पिता को संतुष्ट करनेवाला पुत्र हे जननी, सारे संसार में दुर्लभ है।

यहाँ तुलसीदासजी कहते हैं -" यदि प्रत्येक परिवार में प्रत्येक पुत्र का आचरण राम जैसा हो तो परिवार में सुख-शान्ति रहती है और समाज में समृध्दि रहती है।"[१६]

इसप्रकार राम के वन-गमन के कारण जनता बहुत दुखी हो रही थी अंत में श्रीराम, लक्ष्मण और सीता राज्य-त्याग करके वन को चले गये।

यहाँ तुलसीदासजी ने मंथरा और कैकयी की कूटनीति का लोगों को परिचय दिया है। उसीप्रकार राम एक आदर्श पुत्र हैं यह भी दिखाया है।

उसके बाद शिवजी कहने लगे, -" वन में जाते-जाते श्रीराम रास्ते में सुमंत्र की भेट लेते हैं। उसके बाद गंगा का दर्शन कर सुमंत्र जैसे परम भक्त के यहाँ निवास करते हैं। फिर सुबह होते ही गंगा पार करके उन्होंने सुमंत्र को लौटा दिया फिर गंगा के किनारे आकर राम केवट से मिले। तत्पश्चात् तीनों तीर्थराज प्रयाग में जाकर भरद्वाज के यहाँ निवास करते हैं। फिर वाल्मीकि से मिलकर वे तीनों चित्रकूट में रहने लगे।

इधर अयोध्या में दशरथजी की मृत्यु होती है। भरत को अपनी माँ की कपटनीति समझ में आती है। वह बहुत ही क्रोधीत हो गया। उसने राम से मिलने के लिए जाने की तय्यारी की। साथ कुछ प्रजाजनों, माताओं को ले लिया और राम से मिलने के लिए चल पडा। रास्ते मे राम-सखा गुह से उसकी भेंट होती है। चलते-चलते वह श्रीराम के आश्रम में पहुँच जाता है -

" बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान ॥"[१७]

भरत ने पिता की मृत्यु की वार्ता श्रीरामजी से कही। उसके बाद भरत श्रीराम को वापस चलने के लिए कहता है, लेकिन राम भरत को समझाते हैं और अपनी पादुकायें देकर उन सब को अयोध्या लौटा देते हैं।

उपर्युक्त कथन में तुलसीदास शिवजी द्वारा यह कहना चाहते हैं कि सुमंत्र और निषादराज रामभक्त हैं और उनके द्वारा राम की महिमा गायी है। राम-भरत मिलन में भरत के प्रति राम का प्रेम दिखाकर, आदर्श भाई को व्यवहार को दर्शाते है।

" तुलसी ने भाई-भाई के प्रति आदर्श आचरण की कल्पना राम और भरत के द्वारा की है। ऐसा आदर्श परिवार में हो तो भाइयों के सभी लडाई-झगडे समाप्त हो जायें।"[१८]

शिवजी कहते हैं, -" भरत माता और प्रजाजनों के साथ अयोध्या लौट गये।" जाते समय इंद्रपुत्र जयन्त की नीच करनी की कथा भी वे सुनाते हैं। उसके बाद उन्होंने प्रभु राम और अग्निजी की मित्रता का वर्णन किया फिर। शरभंगजी के शरीर-त्याग देने की कथा कही।

उसके बाद शिवजी ने पार्वती को राम के भक्त सुतीक्ष्ण की भक्ति का परिचय दिया और बताया कि भक्त या ज्ञानी मुनि प्रेम में पूर्ण रूप से विमग्न रहते हैं। उनकी वह, स्थिति वर्णित नहीं की जा सकती। 'श्रीरामने सुतीक्ष्ण की भक्ति से प्रसन्न होकर हे पार्वती, उसे यह वर दिया कि वह प्रगाढ भक्त, वैराग्य, विज्ञान और समस्त गुणों तथा ज्ञान के निधान हो जायेगा, लेकिन उसे इस वर से समाधान नहीं हुआ। वह आत्मशांति के लिए राम को अपने हृदय में हमेशा के लिए निवास करने का कहता है।'

शिवजी आगे कहते हैं - 'राम और लक्ष्मण से शूर्पणखा की भेंट होती है। उसके बुरे बर्ताव के कारण लक्ष्मण ने उसके नाक और कान काट दिये। वह ऐसी स्थिति में बहुत क्रोधित होकर खर-दूषण को राम-लक्ष्मण के साथ युध्द करने के लिए भेजती है। उसमें खर-दूषण पराजीत होते है। उसके बद बाद वह कुंभकर्ण और रावण के पास जाती है। रावण को वह सब वृतान्त सुनाती है। तब रावण बहुत ही क्रोधित होता है। इतर राम सीतासे कहते हैं -

'सुनहु, प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला। मैं कछु करबि ललित नरलीला
तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा। जौ लगि करौं निसाचर बासा।।'[१९]

इधर कपटी रावण ने मारीच के पास जाकर उसे अपनी माया के द्वारा सुंदर मृग बना दिया। सीता ने उस सुंदरम मृग को देखा और उसकी ओर आकर्षित हुओ। राम के पास जाकर उसकी माँग करती है इसप्रकार रावण ने राम को मृग के पीछे भिजवाकर इधर सीता का हरण किया।

इसके बाद शिवजी ने पार्वती को राम ने रावण का वध किस प्रकार किया यह बताया। राम ने मनुष्य अवतार लिया है इसलिए वह सर्व सामान्य मनुष्य जैसा विरह-दु:ख सहने लगा। सीता की खोज के लिए जाते समय रास्ते

में जटायु मिलता है। उसने सीताहरण की कथा राम को सुनाई और राम के प्रति एकनिष्ठता दिखाकर अपना शरीर त्याग दिया। शिवजी कहते हैं - " राम ऐसे अत्यन्त कोमल चित्तवाले दीनदयालु है। हे पार्वती, जो लोग भगवान को छोडकर अन्य विषयों से अनुराग करते हैं वे लोग अभागे हैं।"

राम की महिमा बताते हुए शिवजी कहते हैं, " हे पार्वती, श्रीरामचंद्रजी गुणातीत, तीनों गुणों से परे चराचर जगत के स्वामी और सब के अंतर की बात जाननेवाले हैं।"

" तुलसी ने ब्रह्म के निर्गुण रूप का निरूपण करते हुए उसे गुणरहित अखण्ड, अनन्त, अनादि माना है। वेद उस ब्रह्म को नेति-नेति कह कर उसका निरूपण करते हैं। वह उपाधि रहित और उपमा से रहित है। वह ब्रह्म आनन्द स्वरूप है और तत्ववेत्ता या ब्रह्मज्ञानी उसका चिन्तन करते हैं। जिसके अंश से अनेक शिव, ब्रह्मा और विष्णु उत्पन्न होते हैं।"[२०]

शिवजी ने धीर-विवेकी पुरुषों के मन में वैराग्य को दृढ किया है। वे कहते हैं, हे उमा, हरि का भजन ही सत्य है। यह सारा जगत् स्वप्न की भाँति झूठ है।

आगे शिवजी कहते हैं - " राम और लक्ष्मण की सुग्रीव और हनुमान से भेंट होती है। सुग्रीव अपने भाई वालि की कथा राम से कहता है तब राम वालि का वध करते हैं। इसीलिए उसकी पत्नी तारा राम के पास जाती है तब राम उसे समझाकर भक्ति का वर देते हैं। शिवजी कहते है, " हे पार्वती, श्रीरामजी सब को कठपुतली की तरह नचाते हैं। श्रीरामजी के समान हित करनेवाला गुरु, पिता, माता, बंधु और स्वामी कोई नहीं है।"

"श्रीराम ने सुग्रीव और हनुमान को सीता की खोज करने के लिए भेजा। हनुमानजी बडे-बडे पर्वत सहज ही पार करते हैं। शिवजी कहते हैं, " हे उमा,

इसमें वानर हनुमान की कुछ बढाई नहीं है, यह तो प्रभु का प्रताप है। "

अशोक वाटिका में सीताजी से मिलने के बाद हनुमानजी वाटिका में फल खा रहे थे। वहाँ हनुमान और राक्षसों का युध्द हुआ। युध्द में हनुमान पर मेघनाद ने ब्रह्मबाण छोडकर उसे मूर्च्छित किया। तब शिवजी कहते हैं, - " जिनका नाम जपकर ज्ञानी मनुष्य संसार के बन्धन को काट डालते हैं, उनका दूत कहीं बन्धन में आ सकता है ? "

रावण क्रोधित हो गया। उसने हनुमानजी की पूँछ में आग लगा दी तब अहनुमान ने लंका नगरी को जला दिया। शिवजी कहते हैं, - " हे उमा, जिन्होंने अग्नि को बनाया हनुमान उन्हीं के दूत हैं तो अग्नि से पूँछ कैसी जल सकती है ? "

लंका को जलाने के बाद के बाद सभी वानर श्रीरामजी के पास आते हैं तब श्रीराम हनुमान से पूछते हैं, - " रावण के द्वारा सुरक्षित लंका और उसके बडे किले को तुमने किस तरह जलाया ? " तब हनुमान कहते हैं, - " यह सब तो है रघुनाथजी, आपही का प्रताप है। इसमें मेरी प्रभुता, बडाई कुछ भी नहीं है -

" सो सब तब प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई। "[२१]

उस समय हनुमानजी प्रभु के पास अपनी निश्छल भक्ति की माँग करते हैं तब श्रीराम प्रसन्न होकर ऐसा ही हो ऐसा कहते हैं। शिवजी कहते हैं, - " हे उमा, जिसने श्रीरामजी का स्वभाव जान लिया है, उसे राम भजन छोडकर दूसरी बात ही नहीं सुहाती। यह स्वामी-सेवक का संवाद जिसके हृदय में आ गया वे ही श्री रघुनाथजी के चरणों की भक्ति पाते हैं। "

इसप्रकार तुलसी का मत है कि जो सेवक स्वामी की आज्ञा मानकर अपने कर्तव्य का पालन करता है, वह सेवक स्वामी से भी बडा हो जाता है। हनुमान उसका उदाहरण है। तुलसी ने सेवक का आदर्श स्वामि-भक्ति माना है। तुलसी सेवक-सेवा भाव-भक्ति के पक्षपाती रहे हैं। उनके राम अपने सेवकों पर पूर्ण कृपादृष्टि रखते हैं।"[२२]

शिवजी आगे पार्वती से कहने लगे, -" सभी वानरों को लेकर श्रीराम रावण के साथ युध्द करने जा रहे हैं। तब मन्दोदरी रावण को खूब समझाती है, पर वह कुछ सुनता नहीं। उसके बाद भाई बिभीषण भी उन्हें समझाने आता है। वह कहता है, -" हे नाथ, काम, क्रोध और लोभ मे सब नरक के रास्ते हैं, इन सब को छोडकर श्रीरामजी को भजिये। आपको उलटी बुध्दि ने ग्रस लिया है इसीलिए आप हित को अहित और मित्र को शत्रु मान रहे हैं, जो राक्षस कुल के लिये कालरात्रि है। ऐसा कहकर विभीषण बार-बार रावण के पाँव पकडता है। इसपर रावण ने बहुत क्रोधित होकर उन्हें लात मारी। इतना कहकर शिवजी पार्वती को बताते हैं -" संत का यही बडप्पन है कि वे बुराई करने पर भी भलाई ही करते हैं।"

उसके बाद विभीषण रावण से कहते हैं, -" तुम्हारी सभा काल के वश है। अत: मैं श्रीरघुवीर की शरण में जाता हूँ, मुझे दोष न देना।" तब शिवजी कहते हैं," हे उमा, साधु का अपमान तुरंत ही सम्पूर्ण कल्याण की हानि कर देता है।"

विभीषण श्रीराम की शरण में जाता है। उसके बाद श्रीराम, वानर, विभीषण लंका में प्रवेश करने के लिए सेतु बाँधने लगते हैं। शिवजी पार्वती से कहते हैं, " मेरे बारे में राम कह रहे हैं, - जो छल छोडकर, निष्काम होकर श्रीरामेश्वरजी की सेवा करेंगे, उन्हें शंकरजी मेरी भक्ति देंगे और जो

मेरे बनाये सेतु का दर्शन करेगा वह बिना ही परिश्रम संसार रूपी समुद्र से तर जायेगा। यह रामजी का कथन सब को अच्छा लगा। ' फिर शिवजी कहते हैं, ' हे पार्वती, श्री रघुनाथजी की यह रीति है कि वे शरणागत पर सदा प्रीति करते हैं -

' राम वचन सब के जिय माए । मुनिवर निज-निज आश्रम आए।
गिरिजा रघुपति के यह रीती । संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ।।'[२३]

आगे शिवजी कहते है, ' सभी के कहने के अनुसार अंगद को दूत बनाकर लंका भेज दिया गया। तब अंगद सीधा रावण के पास चला गया। रावण और अंगद के बीच कुछ बातचीत हुआी। उस समय रावण ने राम के बारेमें कुछ कटु शब्द कहे तब अंगद बहुत ही क्रोधित हो गया। तुलसीदास कहते हैं -

' जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा। क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा।
हरिहर निंदा सुनइ जो काना। होइ पाप गोघात समाना ।।'[२४]

अंगद ने रावण से कहा, -' अगर तू इतना बलवान है, तो मेरा चरण उसके स्थान से हटा दे। अगर तू इसमें सफल बनेगा, तो श्रीराम यहाँ से बिना सीता को लिये वापस जायेंगे।' अंगद के चरण को हटाने की सबने कोशिश की पर कोई सफल नहीं हुआ। तब शिवजी कहते हैं, ' श्रीराम के इशारे से विश्व उत्पन्न होता है। उसके प्रभाव से वज्र तृण के समान और तृण वज्र के समान होता है तो राम के दूत का प्रण कैसे टल सकता है ? अंतमें रावण ही हार जाता है।'

तत्पश्चात् युध्द प्रारंभ हो जाता है। युध्द करने के लिए मेघनाद युध्दभूमि में आता है। लक्ष्मण और मेघनाद इन दोनों के युध्द में लक्ष्मण को शक्ति लगती है। तब शिवजी कहते हैं, ' हे पार्वती, जिनके क्रोध की

चौदहों भुवनों को तुरंत ही जला जलती है और देवता, मनुष्य तथा समस्त जीव जिनकी सेवा करते हैं उन्हें कौन जीत सकता है ? इस लीला को वही जान सकता है जिस पर रामजी की कृपा हो -

` सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारर भुवन चारिदस आसू ।
सक संग्राम जीति को ताही । सेव हिं सुर नर अग जग जाही ।। `[२५]

इधर लक्ष्मण को शक्ति लगने पर श्रीराम विलाप कर रहे हैं, व्याकुल होकर रो रहे हैं । तब शिवजी कहते हैं, ` स्वयं श्रीरघुनाथजी एक अद्वितीय और अखण्ड वियोग रहित हैं । भक्तों पर कृपा करनेवाले भगवान ने लीला करके यहाँ मनुष्य की दशा के दर्शन कराये हैं । `

हनुमान संजीवनी ला देते है तब लक्ष्मण जिंदा होते हैं । उसके बाद रावण ने कुंभकर्ण को जगाया । कुंभकर्ण ने वानरों को घायल किया । वे डरकर इधर-उधर भागने लगे । शिवजी पार्वती से कहते हैं, ` श्रीरघुनाथजी वैसे ही नर-लीला कर रहे हैं जैसे गरुड सर्पों के समूह में खेलता हो । `

` तुलसी के राम अवतारी ब्रह्म के रूप में पृथ्वी पर अवतरित होते हैं उनका लीलाचरण धर्म-सम्बन्धी सद्वृत्तियों पर आधृत है । उनके आचरण एवं व्यवहार से जनसाधारण को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है । ईश्वर और ईश्वरीय शक्तियाँ मानव शरीर धारण करके संसार में कल्याण एवं मंगल की ज्योति विकीर्ण करती है । `[२६]

फिर राम और कुंभकर्ण के बीच युध्द हुआ और श्रीरामजी के बाणों से कुंभकर्ण घायल हो गया । शिवजी कहते हैं, ` कुंभकर्ण जैसे नीच राक्षस को भी श्रीराम ने परमधाम दे दिया । वे मनुष्य मंदबुध्दि है, जो ऐसे श्रीराम को नहीं भजते । `

कुंभकर्ण के बाद मेघनाद और वानरों में युध्द शुरू हुआ। मेघनाद ने अपनी माया से बाण चलाकर वानरों को घायल किया। तब रघुनाथजी उसके साथ लडने लगे। मेघनाद ने नाग बाण छोडकर श्रीराम को नागपाश में बध्द किया। तब शिवजी कहते हैं, ` हे उमा, श्रीरामचंद्रजी सदा स्वतंत्र एक अद्वितीय भगवान हैं। वे नर की तरह अनेक प्रकार के दिखावटी वर्तन करते हैं। जिनका नाम जपकर मुनि जन्म-मृत्यु की फाँसी को काट डालते हैं। वे सर्वव्यापक और विश्व के आधार प्रभु कही बन्धन में आ सकते हैं ? `

` गिरिजा जासु नाम जपि मुनि काटहिं भव पास
सो कि बंध तर आवइ व्यापक बिस्व निवास ।।
चरित राम के सगुन भवानी । तर्कि न जाहि बुध्दि बलबानी
अस बिचारि जे तग्य बिरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ।`[२७]

रावण और श्रीरामजी में बहुत ही घमासान युध्द चलता रहा। जब श्रीराम ने रावण को मारने के लिए धनुष्य हाथ में लिया तब तुलसीदासजी कहते हैं, - ` समुद्र और पर्वत डगमगा उठे। देवता हर्षित होकर फूलों की अपार वर्षा करने लगे। अंत में श्रीराम ने रावण के दस सिरों को उडा दिया।` शिवजी कहते हैं, - ` हे पार्वती, इसप्रकार श्रीराम ने रावण को मारा। तुम्हारे प्रश्न के उत्तर में मैंने यह कथा सुनाई है। अब श्रीराम ने राज्यसिंहासन पर बैठकर जो बाललीला की उसे सुनो।`

युध्द समाप्त होने पर सीता को राम के पास लाया गया। और विभीषण का राज्याभिषेक करके राम सीता-लक्ष्मण अपने मित्रों के साथ अयोध्या लौट गये। तब सभी अयोध्यावासी आनंदीत होकर आरती उतारने लगे। भरतजी के आनंद की तो सीमा ही नहीं रही। राम के गुणों का

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

वर्णन सरस्वती भी नहीं कर सकती। फिर भला मनुष्य उनके गुणों का वर्णन कैसे कर सकते हैं। `

श्रीराम सभी से मिल रहे हैं। हे पार्वती, श्रीराम ने जान लिया कि माता कैकयी लज्जित हो रही है इसलिए सबसे पहले वे माता कैकयी से मिले और उसके बाद अपने महल को गये। यह देख कर सभी देवताओं, मुनियों ने राम की स्तुति गायी। मैंने भी स्तुति गायी और उनके चरण कमलों की अचल भक्ति का वरदान माँग लिया।

उसके बाद श्रीराम ने अपने मित्रों को वस्त्र और आभूषण पहनाये और उनको विदा किया। `

शिवाजी कहते हैं, ` हे पार्वती, श्रीराम आनंद से राज्य करने लगे। उनके राज्य में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते थे। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं। सभी नर-नारी उदार हैं, सभी परोपकारी हैं। सभी पुरुष एक पत्नीव्रती है। स्त्रियाँ मन, वचन और कर्म से पति का हित करने वाली हैं। श्रीरामचंद्रजी के राज्य में चंद्रमा अपनी अमृतमयी किरणों से पृथ्वी को पूर्ण कर देते हैं। सूर्य उतना ही तपते हैं जितने की आवश्यकता होती हैं और मेघ भी जितना चाहिये उतना ही जल बरसाते हैं। अयोध्या में रहनेवाले पुरुष और स्त्री सभी कृतार्थ स्वरूप हैं, जहाँ स्वयं सच्चिदानन्दघन ब्रह्म रघुनाथजी राजा हैं। `

तुलसी ने सामाजिक आचरण को राजनीति से जोडा है। उनके राम राजा के रूप में सदा न्याय-सम्मत आचरण के द्वारा राज्य में धर्म की स्थापना करते हैं।

राम की नीतिज्ञता के विषय में डॉ. भरद्वाज का मत है -

` वाल्मिकी रामायण, ` महाभारत ` और ` अध्यात्म रामायण ` के राम की अपेक्षा ` रामचरितमानस ` के राम कहीं अधिक नीतिज्ञ है। `[२८]

शिवजी पार्वती से आगे कहते हैं, - ` भगवान श्रीराम अनन्त हैं, उनके गुण अनन्त हैं। जन्म, कर्म और नाम भी अनन्त हैं। जल की बून्दें और पृथ्वी के रजकण चाहे गिने जा सकते हों, पर श्रीरघुनाथजी का चरित्र अगम्य है। यह पवित्र कथा भगवान के परमपद को देने वाली है। इसके सुनने से अविचल भक्ति प्राप्त होती है। हे उमा, मैंने वह सब सुन्दरकथा कही जो काकभुशुण्डिजी ने गरुड़ को सुनायी थी।`

` बिमल कथा हरि पद दायनी। भगति होइ सुनि अनपायनी।
उमा कहिउँ सब कथा सुहाई। जो भुसुंडि खगपति हि सुनाई।।`[२९]

तब पार्वती बहुत ही हर्षित हुई, और अत्यन्त कोमल वाणी में बोली, - ` मैं धन्य-धन्य हूं। जो, जन्म मृत्यु के भय को हरण करनेवाले श्रीरामजी के गुण सुने। हे नाथ, आपने ` रामचरितमानस ` का गान किया उसे सुनकर अपार सुख पाया। अत: आपने यह कहा कि यह सुन्दर कथा काकभुशुण्डिजी ने गरुड़ से कही थी। तो कौए का शरीर पाकर भी काकभुशुण्डि वैराग्य, ज्ञान और विज्ञान में दृढ है, उनका रघुनाथजी के चरणों में अत्यन्त प्रेम है और उन्हें श्रीरघुनाथजी की भक्ति भी प्राप्त है। यह कैसे ? इस बात पर मुझे संदेह हो रहा है -`

` बिरति ग्यान बिग्यान दृढ राम चरन अति नेह।
बायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह।`[३०]

` हे विश्वनाथ, काकभुशुण्डिजी ने ऐसी दुर्लभ हरि भक्ति को कैसे पाया ? कौए का शरीर किस कारण पाया ? और उसने प्रभु का सुन्दर चरित्र कहाँ पाया ? और यह भी बताइये कि आपने इसे किस प्रकार सुना ? गरुड़जी तो महानज्ञानी, सद्गुणों की राशि, श्रीहरि के सेवक और

उनके वाहन के रूप में निकट रहते हैं, तो उन्होंने मुनियों के समूह को छोड़कर कौए से हरिकथा किस कारण सुनी ? कहिये काकभुशुण्डि और गरुड इन दोनों की बात किस प्रकार हुयी ?` तब पार्वती की सरल और सुन्दर वाणी सुनकर शिवजी प्रसन्न होकर बोले - `हे उमा, तुम धन्य हो, तुम्हारी बुध्दि अत्यन्त पवित्र है। अब वह पवित्र इतिहास सुनो, जिसे सुनने से सारे लोक के भ्रम का नाश हो जाता है।`

`हे पार्वती, तुम्हारे सती जन्म में अग्नि प्रवेश के बाद मैं बहुत ही दु:खी होकर इधर-उधर घूम रहा था। सुमेर गिरि की उत्तर दिशा में एक और नीलपर्वत है। वहाँ एक बरगद का पेड है। उसके नीचे यह काकभुशुण्डिजी रहते हैं। उस वृक्ष के नीचे बैठकर श्रीहरि की कथा अनेक पंछियों को सुनाते हैं। तब मेरे हृदय में विशेष आनन्द उत्पन्न हुआ और मैंने हंस का शरीर धारण करके कुछ समय वहाँ निवास किया और वहाँ मैंने रघुनाथजी के गुणों को आदर सहित सुनकर फिर मैं कैलास को लौट गया।`

`हे पार्वती, अब वही कथा मैं बताता हूँ, जिसके कारण गरुडजी उस काक के पास गये थे। श्रीराम जब नागपाश में बँधे हुए थे तब गरुड के द्वारा उन्हें छुड़वाया जाता हैं। तब गरुडजी को श्रीराम भगवान होकर भी नागपाश में कैसे बन्धे जाते हैं यह संदेह निर्माण हो गया था और उन्हें मैंने छुड़वाया यहि अहंकार भी उसके मन में निर्माण हुआ था। इसलिए वह नारद के पास जाता है। नारद उसे ब्रह्मा के पास भेजते हैं, तब ब्रह्माजी ने उसे मेरे पास भेजा। उस समय मैंने गरुडजी से कहा कि जहाँ प्रतिदिन हरिकथा होती है, तुमको मैं वहीं भेजता हूँ। तुम वहाँ जाकर यह हरिकथा सुनो।`

शिवजी कहते हैं, `हे उमा, मैंने उसको यह नहीं बताया कि पक्षी, पक्षी की बोली समझाते हैं। बायस नीच जाति का पक्षी होकर भी उसके पास ज्ञान भक्ति हैं और वह पक्षिराज होकर भी इसे नहीं जानता। यह उसे

समझाने के लिए और उसका अहंकार नष्ट करने के लिये उसे मैंने काकभुशुंडि के पास भेजा ।

` कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग खगही कै भाषा ।
प्रभु माया बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ।।`[31]

इसप्रकार गरूडजी काकभुशुण्डिजी के पास गये । उन्होंने गरूड के संदेह को नष्ट करने के लिए ` रघमचरितमानस ` का रूपक समझाकर श्रीरामजी की बाललीला से लेकर अयोध्या गमन और रामराज्याभिषेक के साथ अयोध्यापुरी की राजनीति का वर्णन किया । इसप्रकार हे भवानी, काकभुशुण्डिजी ने वह सब कथा कही जो मैंने तुमसे कही । `

शिव और पार्वती संवाद के अंत में तुलसीदासजी ने शिव द्वारा राम की महिमा गायी है ।

तुलसीदासजी कहते हैं, ` जिन्होंने रामकथा को सुना है, वे संसार के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं । शरणागतों को दया के समुद्र श्रीरामजी के चरण कमलों में प्रेम स उत्पन्न होता है । जो मन लगाकर इसे सुनते हैं उनके मन, वचन और कर्म से उत्पन्न पाप नष्ट हो जाते हैं । जहाँ तक वेदों ने साधन बतलाये हैं, उन सब का फल श्रीहरि की भक्ति ही हैं । जो हरिभक्ति को प्राप्त कर लेते हैं और जिसका मन श्रीरामजी के चरणों में अनुरक्त है, वही सर्वज्ञ है, वही गुणी, ज्ञानी और पृथ्वी का भूषण एवं दानी है ।`

` जो मोह को छोडकर श्रीरघुवीरक का भजन करता है, वही नीति में निपुण है, वही परम बुध्दिमान है, वही वेदों के सिध्दान्त को भली भाँति जानता है, वही कवि तथा विद्वान है ।`

तुलसीदासजी कहते हैं, - ` वहीं देश धन्य है, जहाँ श्रीराम हैं। वह स्त्री धन्य है, जो पातिव्रत धर्म का पालन करती है। वह राजा धन्य है, जो उचित न्याय करता है और वह ब्राह्मण धन्य है जो अपने धर्म से नहीं डिगता। वहीं कुल धन्य है और संसार भर के लिए पूज्य है, परमपवित्र है जिसमें रघुवीर जैसे विनम्र पुरुष उत्पन्न हों।`

` तुलसीदास कहते हैं, ` जगत् में धर्म और आचरण के स्वरूप को उजागर करने के लिए ही भगवान अवतार लेते हैं। देवता, मानव मन की सद्वृत्तियों के प्रतीक हैं। भगवान के अवतार के समय देवता भीसहायक रूप में पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। ये संसार से कुप्रवृत्तियों को नष्ट करके विश्व में शान्ति स्थापित करते हैं। `[32]

तुलसीदासजी शिवजी द्वारा यह कहते हैं, ` यह रामकथा ऐसे लोगों से नहीं कहनी चाहिए जो धूर्त, हठी, स्वभाव के हों और श्रीहरि की लीला को मन लगाकर न सुनते हों। यह कथा लोभी, क्रोधी और कामी को नहीं कहनी चाहिए क्योंकि वे श्रीहरि को नही भजते। श्रीरामजी के कथा के अधिकारी वे ही हैं, जिनको सत्संगति अत्यन्त प्रिय है। जिनकी गुरु के चरणों मे प्रीति है, जो नीतिपरायण हैं, वे ही इसके अधिकारी हैं और उनको ही यह कथा अन्यन्त सुख देनेवाली है।`

शिवजी कहते हैं, ` हे गिरिजे, मैंने कलियुग मे के पापों का नाश करनेवाली और मन को पवित्र करनेवाली रामकथा का वर्णन किया। यह रामकथा जन्म-मरणरूपी बीमारी के लिये संजीवनी जडी है। यह वेद और विद्वान पुरुष कहते हैं -`

` रामकथा गिरिजा मैं बरनी। कलि मल समनि मनोमल हरनी।
संसृति रोग संजीवन मूरी। रामकथा गाव हिं श्रुति सूरी।।`[33]

इसप्रकार शिवजी ने ज्ञानपूर्ण वचनों से राम का स्वरूप स्पष्ट करके पार्वती के संशय को दूर किया। संशय दूर होते ही पार्वती के हृदय में 'रघुपति-पद-प्रीति' प्रकट हुई। इसप्रकार 'उमा-शंभु संवाद' 'मानस' का 'ज्ञानघाट' है।

तुलसीदासजी ने इस संवाद में शिवजी द्वारा उमा को राम की महिमा के दृढ ज्ञान से अवगत कराया है। उमा-महेश्वर दोनों का सम्बन्ध दांपत्य भाव का है। यह समानता में असमानता है। शिव उन्हें आदेश भी दे सकते हैं और उपदेश भी कर सकते हैं। यहाँ वक्ता की स्थिति श्रोता से ऊँची है और व्यक्तित्व की तो बात ही नहीं करनी चाहिए क्योंकि वे देवाधि देव हैं, जो कहेंगे साधिकार कहेंगे। यहाँ पार्वती ने शिष्टाचार को ग्रहण करके - 'जो नृप तनयत ब्रह्म किमि' की दार्शनिक प्रणाली को अपना कर प्रश्न को अधिक गम्भीर बनाया है। इसलिए शिव के कथन में यहाँ तर्क एवं ज्ञान की प्रधानता दिखाई देती है। उसीप्रकार शिष्टाचार की छाप भी बडी मात्रा में दिखाई देती है। इस संवाद में - 'धन्य धन्य गिरिजा कुमारी उमा प्रश्न तव सहज सुहाई' आदि पंक्तियों में हमें शिष्टाचार दिखाई देता है।

तुलसीदास ज्ञान को भक्ति का आधार आवश्यक मानते हैं। इसीलिए वे कहते हैं कि ज्ञान से ज्ञानी में अहंभाव, दम्भ और दुर्गुण आ जाते हैं, जो बुध्दि को भेदक बनाते हैं उससे अपने पराये का भेद अधिक जागृत होता है। इसलिए ज्ञान के साथ भक्ति की आवश्यकता है। तुलसी का यह मत है कि ज्ञान से युक्त भक्ति का स्वरूप ही मानव जीवन का श्रेष्ठ मार्ग है।

इस संवाद में तुलसीदासजी ने ज्ञान को निर्गुण और भक्ति को सगुण रूप में ग्रहण किया है। जो सर्वशक्तिमान निर्गुण ब्रह्म है, वही अधर्म को बचाने के लिए और भक्तों के प्रेमवश उन्हें दर्शन देने के लिए सगुण रूप धारण

करते हैं। अत: ब्रह्म निर्गुण भी है और सगुण भी है ऐसा बताते हैं। तुलसी ने यहाँ सगुण-निर्गुण मे समन्वय कर दिया है। ब्रह्म के सगुण रूप को सराहा है, क्योंकि वह अवतार रूप में जनसाधारण के आचरण का आधार होता है।

इस संवाद में रामावतार के अनेक उद्देश्य तुलसीदासजी ने बताये हैं। इसलिए राम ने प्रत्येक कल्प में भिन्न भिन्न रूप में जन्म लिया है। इस संवाद में प्रथम साधु-जन, ऋषि, मुनि, गौ, ब्राह्मण, भूमि, देवता और मनुष्यों के हित के लिए अवतार लिया है। उसके बाद लोगों को धर्म और आचरण का उपदेश देने के लिए रामावतार का मुख्य उद्देश्य माना है। और य लोगों को मर्यादित आचरण का पालन करने के लिए कहा है।

तुलसीदासजी कहते हैं, - ` काम, क्रोध, मोह जिस व्यक्ति में हैं, वह भगवान का सच्चा भक्त नहीं हो सकता। भगवान सच्ची भक्ति में वश होते हैं। अनादि शक्ति भी भक्ति के कारण भक्तों के लिए अपनी क्रिया बदल देती है। श्रीराम सर्वोपरि ब्रह्म हैं और सीताजी अनादि शक्ति हैं, जो सृष्टि रचती हैं। भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न भगवान श्रीराम के अंश हैं।` हनुमान, विभीषण, सुग्रीव आदि भी उनकी ही शक्ति को श्रेष्ठ मानकर अनन्यभाव से राम की भक्ति करते हैं अत: तुलसीदासजी ने उन्हें श्रेष्ठ भक्त के रूप में स्थापित किया है।

तुलसीदासजी इस संवाद के द्वारा कहते हैं, ` इस संसार में मनुष्य प्राय: अपने नाम से, अपने पद से चिपका रहता है। यश और सम्मान की उम्मीद से मनुष्य की आशा सदा ही बढती जाती है। वह समझने लगता है कि इस जगत् में मेरे जैसा ? श्रेष्ठ पराक्रमी बुध्दिमानी कोई भी नहीं है। मनुष्य के इस अहंकार के नाश के लिए इस संवाद में रावण, परशुराम का

उदाहरण दिया है । रावण अपने अहंकार से अलग नहीं हो जाता और वह राममक्ति को ललकारता है अत: उसका नाश होता है । इस अहंकार के नाश के लिए तुलसी मक्ति को एकमात्र साधन मानते हैं ।

तुलसीदासजी मक्ति की अनिवार्यता इसलिए मानते हैं कि ज्ञान बिना मक्ति के अहंकार को जन्म देता है । इस संवाद में पार्वती ने शिवजी से कहा कि आपने गरुडजी को राम की महिमा क्यों नहीं कही ? तब शिवजी द्वारा यह कहा जाता है - ' मुझे यह अभिमान न हो कि मैं रामकथा का ज्ञाता हूं । इसप्रकार अभिमान से दूर रहने के लिए शिवजी गरुड को रामकथा नहीं कहते । गरुड के अहंकार को नष्ट करने के लिए काकमुशुण्डि के पास उसे भेजा है इसलिए कि काकमुशुण्डि हिन पक्षी होकर भी राम पर अनन्य श्रध्दा होने के कारण इस दुर्लभ मक्ति को उसने प्राप्त कर लिया था । यह गरुड को दिखाया है ।

तुलसीदासजी ने यह कहा है कि मक्ति का समर्पण-भाव भक्त में यह आस्था जगा देता है कि यह ज्ञान भी प्रभु की कृपा का ही प्रसाद है । कोरा ज्ञानी पांडित्य के अहंकार की शिला के नीचे दबकर समाप्त हो जाता है ।

तुलसीदासजी कहते हैं, ' बिना ज्ञान या मक्ति से कर्म की निश्चित नहीं किया जा सकता । ' अत: ज्ञान और मक्ति के आधारपर कर्म किया जा सकता है । इन तीनों के द्वारा सांसारिक बन्धन और माया दूर हो सकती है ।

इसप्रकार - ' गोस्वामीजी के राम गुरु, ब्राह्मण तथा नगर निवासियों को अपने निकट बुलाकर स्वयं मेव उन्हें मानव जीवन की सार्थकता और उच्चता का रहस्य समझाते हैं और उन्हें सत्संग, मक्ति, ज्ञान एवं वैराग्य धर्म, एवं अधर्म तथा सत्याचरण आदि की चर्चा करते हैं । '[३४]

इस संवाद के द्वारा तुलसीदास ने संसार के सामने राम को एक आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है। मानस के इस संवाद में आदर्श भाई, आदर्श माता-पिता, एकनिष्ठ, एक वचनी पति-पत्नी, आदर्श गुरु, एवं सेवाभावी सेवक इन सभी को एक श्रेष्ठ धरातल पर अंकित किया है तथा उन तमाम रिश्तों को उच्चतम श्रेणी प्रदान करके हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

तुलसीदासजी ने शिव द्वारा उमा के संदेह को दूर करके यहि कहा है, `संदेह, मोह एवं भ्रम की त्रिविकट आँधी से बचकर ही सच्च आनन्द की और ज्ञान की उपलब्धि होती है।`

इसप्रकार यह स्पष्ट है कि उमा-शंभु संवाद मानस का `ज्ञानघाट` है। संशय के मिट जाने पर ज्ञान के इस घाट पर उतरकर रामचरितरूपी जल का आस्वाद लिया जा सकता है।

<u>निष्कर्ष</u> :

ज्ञान के बिना भक्ति अधुरी है, यह बताने के लिए तुलसीदासजी ने `रामचरितमानस` के अंतर्गत इस शिव-उमा संवाद की योजना की है। शंकाशीलता ज्ञान की पहली सीढी है, यह बात इस पूरे संवाद में अभिव्यक्त हुयी है। राम के बारेमें उत्पन्न उमा की शंकाओं का शिवजी ने अत्यन्त सुधडता से निराकरण किया है। इस संवाद में तुलसी ने राम-महिमा के दृढ ज्ञान को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

मानस के चार संवादमें मे यह सब से बडा संवाद रहा है। सामान्य भाषा में जिसे हम `मन` कहते हैं `मानस` उसी का साहित्यिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से परिष्कृत रूप कहा जा सकता है। इसी मन में उत्पन्न विविध प्रश्नों, शंकाओं के परिष्करण के हेतु शिव-उमा संवाद महत्वपूर्ण है। इस संवाद में ज्ञान का प्रतिपादन हुआ है इसीलिए इसे `ज्ञानघाट` कहा जाता है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

पूरे संवाद में सम्पूर्ण रामकथा का परिचय हो जाता है। उसके साथ-साथ भक्ति में ज्ञानमार्ग के महत्व का भी प्रतिपादन हुआ है। परब्रह्म राम संबंधी उमा की जिज्ञासाओं तथा प्रश्नों को शिवजी विविध कथाओं के द्वारा यहाँ मुखरित करते हैं। निर्गुण और सगुण में कोई अंतर नही है यह बताकर सगुण राम क्यों धारण करते हैं ? इसके जबाब में शिवजी राम की बाललीलाओं से लेकर उनके राजसिंहासन पर बैठने तक की कथा को विस्तार से बताते है। अन्याय और असत्य की मात्रा बढनेपर ही निर्गुण परब्रह्म सगुण रूप में अवतार ग्रहण करते हैं।

अज्ञान के कारण भक्तों में अभिमान या दंभ निर्माण हो जाता है इसीलिए ज्ञान को भक्ति का आधार बताया गया है। भक्त को परमात्मा के प्रति लीन रहना चाहिए। इसीलिए गरुड की शंकाओं का परिष्करण स्वयं शिव नहीं करते। इसके दो कारण इस संवाद में बतलाये हैं - एक तो यह कि स्वयं शिवजी को राम के ज्ञाता होने का अभिमान न हो। दूसरा गरुड का गर्व-हरण हीन जाति के पक्षी द्वारा हो।

इस संवाद म के द्वारा तुलसीदासजी ने मानव राम के साथ-साथ उनके परब्रह्मस्वरूप का भी ज्ञान बार-बार कराया है। इस संवाद के द्वारा जगत के सभी रिशते-नातों के आदर्श भी निर्दिष्ट किये हैं। इस संवाद की विशेषता यह है कि तुलसी ने शिव के मुख से उमा के हर संदेह का विभिन्न कथाओं के द्वारा निराकरण किया है।

तुलसीदासजी ने शिव-उमा संवाद में जीवन के हर क्षेत्र की सार्थकता का अंतिम सत्य परब्रह्म ही है यह बताया है। शिव की शंका समाधान पध्दति ज्ञान से ओत-प्रोत है। वे कहते हैं कि भक्त को भगवान के चरणों मे स्वयं को पूर्ण समर्पित कर देना चाहिए। उन्होंने ज्ञान में भक्ति की आवश्यकता का समर्थन किया है। उनका यह मत है कि ज्ञान से युक्त भक्ति का स्वरूप ही मानव जीवन का श्रेष्ठ मार्ग है।

संदर्भ सूची

१) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
१।१०७,३,४
गीताप्रेस गोरखपुर
४३ वा संस्करण
संवत २०४१

२) तुलसी काव्य - नये पुराने संदर्भ
डॉ. रामबाबू शर्मा
वाणी प्रकाशन
दिल्ली

३) रामचरित मानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
१।१११,१
गीता प्रेस गोरखपुर
४३ वा संस्करण
संवत २०४१

४) तुलसीदास और उनका सुन्दरकाण्ड
डॉ. श्रीनिवास शर्मा
पृ. ६४
सूर्य प्रकाशन
नई सड़क, दिल्ली
संस्करण १९८८

५) रामचरितमानस
हनुमानप्रसाद पोद्दार
१।११५
गीताप्रेस गोरखपुर
४३ वा संस्करण संवत २०४१

६) तुलसी का मानस
मुंशीराम शर्मा
पृ. १०९
ग्रन्थम प्रकाशन
रामबाग कानपुर
प्रथम संस्करण, १९७२.

७) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
१।१२४ क
गीताप्रेस गोरखपुर
४३ वा संस्करण
संवत २०४१

८) वही
१।१८३,२

९) वही
१।१८६,१

१०) मानस मंथन
डॉ. स्वामीनाथ शर्मा
पृ. ५६
आशुतोष प्रकाशन
चेतगंज वाराणसी
प्रथम संस्करण १९६६

११) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
१।१९९,३
गीताप्रेस गोरखपुर
४३ वा संस्करण
संवत २०४१

१२) वही
१।२००,४

१३) गोस्वामी तुलसीदास
डॉ. रामदत्त भरद्वाज
पृ. ४३९
भारती साहित्य मन्दिर
दिल्ली संस्करण १९६२

१४) रसवंती
प्रेमनारायण टंडन
पृ. ५९
१९६९ का अंक

१५) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
२।४०,४
गीताप्रेस गोरखपुर
४३ वा संस्करण
संवत २०४१

१६) तुलसी काव्य में धर्म और आचरण का स्वरूप
डॉ चरण सखी शर्मा
पृ. १५४
प्रवीण प्रकाशन
महरौली नई दिल्ली
प्रथम संस्करण १९८४

१७) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
२।२४०
गीताप्रेस गोरखपुर
४३ वा संस्करण
संवत २०४१

१८) तुलसी काव्य में धर्म और आचरण का स्वरूप
डॉ चरण सखी शर्मा
पृ. १५५
प्रवीण प्रकाशन
महरौली, नई दिल्ली
प्रथम संस्करण १९८४

१९) वही
३।२३.१

२०) दोहावली
हनुमान प्रसाद पोद्दार
दो. १९९
गीताप्रेस गोरखपुर
२० संस्करण, २०३१ संवत

२१) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
५। ३२.५
गीताप्रेस गोरखपुर
४३ वा संस्करण
संवत २०४१

२२) तुलसी काव्य में धर्म और आचरण का स्वरूप
डॉ चरण सखी शर्मा
पृ. १५७
प्रवीण प्रकाशन
महरौली, नई दिल्ली
प्रथम संस्करण १९८४

२३) रामचरित्र मानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
६। २,३
गीताप्रेस, गोरखपुर
४३ संस्करण
संवत २०४१

२४) वही
६। ३१,१

२५) वही
६। ५४.१

२६) तुलसी काव्यमें धर्म और आचरण का स्वरूप
डॉ चरण सखी शर्मा
पृ. १२३
प्रवीण प्रकाशन
महरौली, नई दिल्ली
प्रथम संस्करण १९८४

२७) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीताप्रेस गोरखपुर
४३ संस्करण सं. २०४१

२८) गोस्वामी तुलसीदास
डॉ रामदत्त भरद्वाज
पृ. ४५४
भारती साहित्य मन्दिर
दिल्ली संस्करण १९६२

२९) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
अ ५१.३
गीताप्रेस, गोरखपुर
४३ संस्करण, संवत २०४१

३०) वही
अ ५३

३१) वही
अ ६१,५

३२) तुलसी काव्य में धर्म और आचरण का स्वरूप
डॉ चरण सखी शर्मा
पृ. १२४
प्रवीण प्रकाशन
महरौली, नई दिल्ली
प्रथम संस्करण, १९८४

३३) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
अ १२८,१
गीताप्रेस, गोरखपुर
४३ वा संस्करण, संवत १०४२

३४) रामचरितमानस का काव्य शास्त्रीय अनुशीलन
डॉ राजकुमार पाण्डेय
पृ. ११९
अनुसन्धान प्रकाशन
आचार्य नगर, कानपुर
१९६३